International Journal of Research
e-ISSN: 2348-6848 & p-ISSN 2348-795X Vol-5, Special Issue-9
International Seminar on Changing Trends in Historiography: A Global Perspective
Held on 2nd February 2018 organized by The Post Graduate Department of History. Dev Samaj College for Women, Ferozepur City, Punjab, India

हड़प्पा संस्कृति के वे स्थल जिन्होंने विश्व इतिहास को बदल दिया

अमित कुमार सिंह

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, देव समाज कालेज फॉर वीमेन, फिरोजपुर शहर, पंजाब

संदीप कौर

छात्रा, MA, इतिहास, द्वितीय वर्षदेव समाज कालेज फॉर वीमेन, फिरोजपुर शहर, पंजाब

शोध संक्षेप

सिंधु घाटी सभ्यता (3300 ईसापूर्व से 1700 ईसापूर्व तक) विश्व की प्राचीन नदी घाटी सभ्यताओं में से एक प्रमुख सभ्यता है। सम्मानित पत्रिका नेचर में प्रकाशित शोध के अनुसार यह सभ्यता कम से कम 8000 वर्ष पुरानी है। यह हड़प्पा सभ्यता और 'सिंधु-सरस्वती सभ्यता' के नाम से भी जानी जाती है। इसका विकास सिंधु और घग्घर/हकड़ा (प्राचीन सरस्वती) के किनारे हुआ। मोहनजोदड़ो, कालीबंगा, लोथल, धोलावीरा, राखीगढ़ी और हड़प्पा इसके प्रमुख केन्द्र थे। दिसम्बर 2014 में भिर्दाना को अब तक का खोजा गया सबसे प्राचीन नगर माना गया सिंधु घाटी सभ्यता का। ब्रिटिश काल में हुई खुदाइयों के आधार पर पुरातत्ववेत्ता और इतिहासकारों का अनुमान है कि यह अत्यंत विकसित सभ्यता थी और ये शहर अनेक बार बसे और उजड़े हैं। इस शोध का उद्देश्य है उन हड़प्पीय स्थलों का वर्णन करना जिन्होंने भारतीय तथा इतिहास की समझ धारा को ही बदल कर रख दिया था।

मुख्य शब्द – सिन्धु घाटी की सभ्यता, हड़प्पा, कांस्य युग, मोहनजोदड़ो

भूमिका

1826 *चार्ल्स मैसेन* ने पहली बार इस पुरानी सभ्यता को खोजा। कनिंघम ने 1856 में इस सभ्यता के बारे में सर्वेक्षण किया। 1856 में कराची से लाहौर के मध्य रेलवे लाइन के निर्माण के दौरान बर्टन बंधुओं द्वारा हड़प्पा स्थल की सूचना सरकार को दी। इसी क्रम में 1861 में *एलेक्जेंडर कनिंघम* के निर्देशन में भारतीय पुरातत्व विभाग की स्थापना की। 1904 में *लार्ड कर्जन* द्वारा *जॉन मार्शल* को भारतीय पुरातात्विक विभाग (ASI) का महानिदेशक बनाया गया। *फ्लीट* ने इस पुरानी सभ्यता के बारे में एक लेख लिखा। 1921 में दयाराम साहनी ने हड़प्पा का उत्खनन किया। इस प्रकार इस सभ्यता का नाम हड़प्पा सभ्यता रखा गया। यह सभ्यता सिन्धु नदी घाटी में फैली हुई थी इसलिए इसका नाम सिन्धु घाटी सभ्यता रखा गया। प्रथम बार नगरों के उदय के कारण इसे प्रथम नगरीकरण भी कहा जाता है। प्रथम बार कांस्य के प्रयोग के कारण इसे कांस्य सभ्यता भी कहा जाता है। सिन्धु घाटी सभ्यता के 1400 केन्द्रों को खोजा जा सका है जिसमें से 925 केन्द्र भारत में है। 80 प्रतिशत स्थल सरस्वती नदी और उसकी सहायक नदियों के आस-पास है। अभी तक कुल खोजों में से 3 प्रतिशत स्थलों का ही उत्खनन हो पाया है।

हड़प्पा

हडप्पा शहर जो रावी नदी के तट पर, पंजाब, पकिस्तान में स्थित है और इसके पहले उल्लेख कर्ता चार्ल्स मेसन हैं। यह सिन्धु सभ्यता का दूसरा सबसे बड़ा स्थल इसके। दुर्ग वाले टीले को AB कहते हैं। केवल हड़प्पा में ताम्बे के उत्पादन के लिए १६ चूल्हे पाए गये हैं। दुर्ग के बाहर के टीले को F नाम दिया गया। श्रमिक आवास और अनाज कूटने का गोल चबूतरा मिला है। F में अटठारह गोल चबूतरे अनाज कूटने के लिए मिले हैं। इसी पर श्रमिक आवास भी मिला है। जौ की भुन्सी व जौ का डंठल मिला है हडप्पा में पाए गये एक ताम्बे के भण्डार में कांसा के ढक्कन वाला एक बड़ा बर्तन मिला है जिसमे भोजन पकाया जाता रहा होगा। हडप्पा की एक मुहर में बहुत सारे लाइन में खड़े जंतुओं में एक गाय/बैल का चित्र है।

इसके एक कब्र से एक स्त्री का शव एक बच्चे के साथ पाया गया है जिसकी मौत शायद प्रसव के वक़्त हुई होगी। यहाँ अन्न भण्डार में अनाज का कोई दाना नहीं पाया गया है दक्षिण में एक कब्रिस्तान मिला है- R-37 हडप्पा में कांसे के रथ की मूर्ति मिली है।

मोहनजोदड़ो

पकिस्तान के सिंध प्रांत के लरकाना जिले में सिन्धु नदी के किनारे स्थित यह सबसे बड़ा नगर है इसके दक्षिण पूर्व में एक मीनार पाया गया है। इसका अर्थ है- मुर्दों का टीला जिसे राखाल दास बैनर्जी ने खोजा। इसमें कुषाण काल का एक स्तूप भी पाया गया है। इसका स्नानागार फर्श पकी ईंटो का बना है और पास ही एक बड़ा सा कुआ है। दक्षिण पश्चिम में पानी निकालने को नालियां बनी हैं। विशाल स्नानागार के जमीन के फर्श में पानी के रिसाव को रोकने के लिए जिप्सम का प्रयोग किया गया है। यह विश्व का पहला वाटर प्रूफिंग का उदाहरण है। यहाँ एक चमकीला मिटटी का बर्तन पाया गया है, धूसर बर्तन पर जमुनी रंग का एक शीशे जैसी ओपकारी की गयी है और ग्लेज़ उत्पन्न किया गया है।यह विश्व में ओपकारी का पहला प्रमाण है। स्नानागार के पूर्व में एक बड़ा भवन है जिसमे ८ कमरों वाला एक बाथरूम बना है। इसका उपयोग धर्म संबंधी स्नान के लिए होता था। यहाँ से एक चांदी के बर्तन पर लिपटे हुए सूती कपडे मिले हैं। एक ताम्बे के पात्र में सोने की वस्तुए भारी मात्रा में मिली हैं। इनमे 4 जेवरों में छोटे अभिलेख हैं। शायद यह जेवरों के स्वामी का नाम होगा। मार्शल इसे तत्कालीन विश्व का आश्चर्यजनक निर्माण कहता है। जोनसन के अनुसार मोहनजोदड़ो में 700 से अधिक कुए थे यानि हर 3 मकान पर एक कुआ, ज्यादातर मकानों में 1 कुंआ होता ही था यहाँ शंख का बना हुआ एक तराजू पाया गया है। यहाँ से अब तक का सबसे बड़ा बटखरा 10।865 ग्राम का पाया गया है।

मोहनजोदड़ो में कांसे कि नर्तकी कि मूर्ती मिली है। यहाँ एक उत्कीर्ण कांसे की कुल्हाड़ी मिली है । मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक सील पर एक लाइन में खड़े 7 लोगों की आकृतियाँ बनी हैं जो एक पीपल के पेड़ के नीचे खड़े हैं और सींग वाली एक आकृति को देख रहे हैं। इसे हिन्दू धर्म में प्रचलित सप्तमातृका का अवधारणा से जोड़ा गया है। इसके अतिरिक्त यहाँ 21 मानव कंकाल मिले हैं लेकिन कब्रिस्तान नही मिला है। पिग्गट ने हडप्पा व मोहनजोदड़ो को सिन्धु सभ्यता कि जुड़ुआ राजधानी कहा है।

चन्हुदड़ो

सिन्धु नदी के बाए स्थित मोहनजोदड़ो से 130 किमी दक्षिण में है। यह शिल्प कला का एक केंद्र था इसकी खोज एन जी मजुमदार ने की है। यहाँ सिन्धु सभ्यता के बाद झुकर व झांगर संस्कृति का विकास हुआ। मैके ने यहाँ मनके बनाने का कारखाना खोजा है। यहाँ मुद्रा मिली है जिसपर तीन घडियाल व दो मछलियाँ अंकित हैं। इसकी एक ईंटो पर बिल्ली का पीछा करते कुत्ते के पंजों के निशान हैं यह एकमात्र स्थान है जहाँ से वक्राकार इंटे मिली।

International Journal of Research
e-ISSN: 2348-6848 & p-ISSN 2348-795X Vol-5, Special Issue-9
International Seminar on Changing Trends in Historiography: A Global Perspective
Held on 2nd February 2018 organized by The Post Graduate Department of History. Dev Samaj College for Women, Ferozepur City, Punjab, India

लोथल

इसका नाम 'लघु हडप्पा' व 'लघु मोहनजोदड़ो' भी है। इसकी खोज एस आर राव ने की । यह गुजरात , अहमदाबाद में भोगवा नदी के किनारे स्थित है। एक गोदिवाडा मिला है यहाँ। यहाँ जहाज आते जाते थे। जल प्रबंध कि सबसे उत्तम व्यवस्था युक्त व नगर के बाहर उत्तर पश्चिम में समाधि क्षेत्र था। यहाँ से बीस समाधियाँ मिली हैं । तीन इकट्ठे समाधियों का उदाहरण मिला है। यह सती प्रथा कि तरफ संकेत करता है। यहाँ की अन्य महत्वपूर्ण प्राप्तियों में हैं- एक अग्निकुंड, एक प्रशासनिक भवन, मनके बनाने का कारखाना, रंगाई कुण्ड इसके अलावा यहाँ एक वर्कशॉप मिलही जहाँ समानो को बनाने व पैक करने की सुविधा थी व ताम्बे के मनके बनाने वाले शिल्पकारों का बाजार मिला है। यहाँ के डकयार्ड में नहर से पानी पहुंचाया जाता था। यहाँ ताम्बे का एक वर्कशॉप पाया गया है। यहाँ से एक हाथी दांत का बना हुआ एक तराजू पाया गया है

कालीबंगा

कालीबंगा का अर्थ है- काले रंग कि चूड़ियाँ, यह चूड़ी निर्माण का एक बड़ा केंद्र था। इसकी खोज अमलानंद घोष ने की है. यह स्थित है राजस्थान के गंगानगर जिले में। यह प्राचीन सरस्वती व दृष्दती नदियों के बीच था। सरस्वती का आधुनिक नाम है घघ्घर व दृष्दती का आधुनिक नाम है- चौतंग । प्राक सैन्धव सभ्यता के प्रमाण, हल से जुते हुए खेतों का साक्ष्य, दो फसलों को एक साथ बोए जाने का प्रमाण, आयताकार अग्निकुंड व वेदिकाएं, दक्षिण पश्चिम में कब्रिस्तान आदि के अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण प्राप्तियां हैं - हाथी दांत की कंघी, ताम्बे का एक भैंस व सांड, पत्थर का लिंग, सींग वाले देवता की टेराकोटा प्रतिमा। कालीबंगा में एक सील पर एक सींग वाले देवता के समक्ष एक पशु को खींच कर ले जाते दिखाया जा रहा है , इसे पशुबलि प्रथा से जोड़ा जाता है। यहीं एक सील पर एक स्त्री को दो पुरुषों द्वारा खींचने का प्रयास किया जा रहा है। इसे नर बली से जोड़ने का प्रयास हुआ है। यहीं से भूकंप से प्राचीनतम साक्ष्य मिले हैं.

बनवाली

हरियाणा के हिसार जिले में सरस्वती नदी के किनारे स्थित इसकी खोज आर एस बिष्ट ने की थी। पकी हुई मिटटी का बना हल और बढियां किस्म का जौ, जल निकासी प्रणाली का अभाव, प्राक हडप्पा- हडप्पा व हडप्पा उत्तर काल के प्रमाण , मकान सजे हुए- समृद्ध नगर, अग्निवेदिकाए, अर्ध वृत्ताकार ढांचे- मंदिर होने कि संभावना इसकी प्रमुख विशेषताएं हैं । यहाँ किला जो मिला है वह बेलनाकार है । मुहरों की प्राप्ति केवल निचले छेत्र से हुई है न कि किले से।

निष्कर्ष

यह सभ्यता मुख्यतः 2500 ई से .पू.1800 ईअपने अंतिम चरण तक रही। ऐसा आभास होता है कि यह सभ्यता .पू . में ह्रासोन्मुख थी। इस समय मकानों में पुरानी ईंटों के प्रयोग की जानकारी मिलती है। इसके विनाश के कारणों पर बर्बर आक्रमण :विद्वान सहमत नहीं हैं। सिंधु घाटी सभ्यता के अवसान के पीछे विभिन्न तर्क दिये जाते हैं जैसे, जलवायु परिवर्तन एवं पारिस्थितिक असंतुलन, बाढ तथा भूतात्विक परिवर्तन-, महामारी, आर्थिक कारण। ऐसा लगता है कि इस सभ्यता के पतन का कोई एक कारण नहीं था बल्कि विभिन्न कारणों के मेल से ऐसा हुआ। जो अलग अलग समय में या एक साथ होने कि सम्भावना है। मोहेन्जो दरो में नगर और जल निकास कि व्यवस्था से महामारी कि सम्भावना कम लगती है। भीषण अग्निकान्ड के भी प्रमाण प्राप्त हुए है। मोहेन्जोदरो के एक कमरे से 14 नर कंकाल मिले है जो आक्रमण, आगजनी, महामारी के संकेत है।

रेफरेंस

1. Kenoyer, J.M., "*Ancient Cities of the Indus Valley Civilization*", Oxford University Press, Oxford, New York, Delhi, 1998.

2. Jansen, Michael, *Mohenjo-Daro, City of Wells and Drains: Water Splendor 4500 years ago*", Bonn, 1993.
3. Possehl, G.L., "*Indus Age; The Beginnings*", Oxford and IBH Publishing, New Delhi, 1999.
4. Possehl, G.L., "*Harappan Civilization: a Recent Perspective*", Oxford and IBH Publications, New Delhi, 1993.
5. Allchin, F. Raymond, ed., "*The Archaeology of Early Historic South Asia: The Emergence of Cities and States*", Cambridge University Press, Cambridge, 1995.
6. Allchin, Raymond and Bridget, "*Origins of a Civilization: The Prehistory and Early Archaeology of South Asia*", New Delhi, 1997.
7. Chakrabarti, Dilip K., "*The Archaeology of Ancient Indian Cities*", Oxford University Press, Delhi, 1995.
8. Gupta, S.P., "*The Indus-Saraswati Civilization*", Pratibha Prakashan, Delhi, 1996.
9. Agrawal, D.P., "*The Archaeology of India*", Curzon Press, London, 1982.